03-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - बाप की आशीर्वाद लेनी है तो सर्विसएबुल सपूत बच्चे बन सबको सुख दो, किसी को भी दु:ख न दो"

प्रश्नः- धर्मराज की सजाओं से छूटने के लिए किन ईश्वरीय नियमों पर ध्यान देना है?

उत्तर:- कभी भी ईश्वर के सामने प्रतिज्ञा कर उसकी अवज्ञा नहीं करना है। किसी को दु:ख नहीं देना। क्रोध करना, तंग करना अर्थात् ऐसी चलन चलना जिससे ईश्वर का नाम बदनाम हो... तो उन्हें बहुत सजायें खानी पड़ती इसलिए ऐसा कोई कर्म नहीं करना है। माया के कितने भी तूफान आयें, बीमारी उथल खाये लेकिन राइट-रांग की बुद्धि से जजमेंट कर रांग कर्म से सदा बचे रहना।

गीत:-कौन आया मेरे मन के द्वारे... Click

कौन आया, कौन आया
कौन आया मेरे मन के द्वारे,
पायल की झनकार लिये।
कौन आया मेरे मन के द्वारे,
पायल की झनकार लिये।
कौन आया...

आँख न जाने, दिल पहचाने,
आँख न जाने, दिल पहचाने,
सूरतिया कुछ ऐसी।
आँख न जाने, दिल पहचाने,
सूरतिया कुछ ऐसी।
याद करूँ तो, याद न आये,
मूरतिया ये कैसी?
पागल मनवा, सोच में डूबा,
सपनों का संसार लिये।
कौन आया मेरे मन के द्वारे,
पायल की झनकार लिये।

इक पल सोचूँ, मेरी आशा
रूप बदल कर आई।
इक पल सोचूँ, मेरी आशा
रूप बदल कर आई।
दूजे पल फिर, ध्यान ये आए,
हो न कहीं परछाई।
जो परदेसी के घर आई,
एक अनोखा प्यार लिये।

Points ग M.imp.

03-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

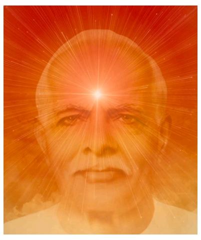

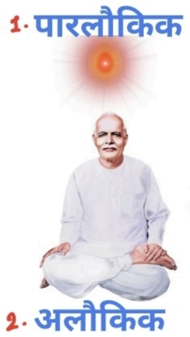

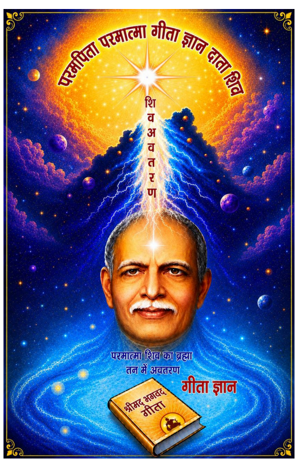

ओम् शान्ति। यह किसने कहा - ओम् शान्ति। बाप और दादा। यह तो बच्चों को जरूर निश्चय होगा कि हमारा पारलौकिक बाप है - परमपिता परमात्मा शिव और यह (ब्रह्मा) सब बच्चों का अलौकिक बाप है, इनको ही प्रजापिता ब्रह्मा कहेंगे। इतने बच्चे और किसको होते हैं क्या, सिवाए प्रजापिता ब्रह्मा के। पहले नहीं थे जबकि बेहद के बाप ने इसमें प्रवेश किया है तो यह हो गया दादा। यह दादा खुद कहते हैं कि तुमको पारलौकिक बाप की प्रॉपर्टी मिलती है। पोत्रे हमेशा दादे के वारिस होते हैं। उनका बुद्धियोग दादे में जाता है क्योंकि दादे की प्रापर्टी का हक मिलना है। जैसे राजाओं के पास जो बच्चे जन्म लेते रहेंगे, ऐसे ही कहेंगे बड़ों की प्रापर्टी है। बड़ों की प्रापर्टी पर उन्हों का हक है ही। तुम बच्चे जानते हो कि हम बेहद के बाप द्वारा बड़े ते बड़ी प्रापर्टी स्वर्ग की बादशाही ले रहे हैं। हमको वह बाप पढ़ा रहे हैं। तुम अब सम्मुख बैठे हो। सम्मुख का नशा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रहता है। कोई की दिल में तो बड़ा लव रहता है। हम ऊंच ते

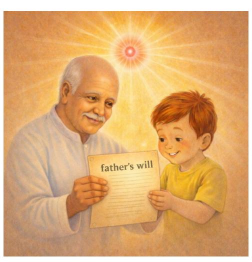

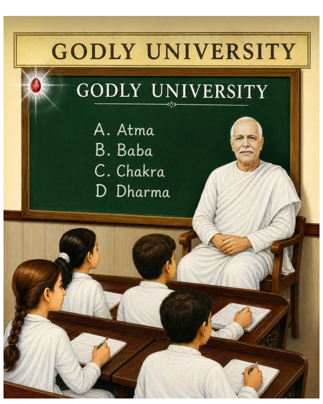

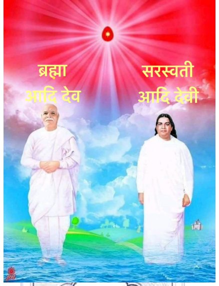

03-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ऊंच भगवान के आकर इस साकार मात-पिता द्वारा वारिस बनते हैं। बेहद का बाप बहुत मीठा है, जो हमको राजाई के लायक बनाते हैं। माया ने बिल्कुल ही नालायक बना दिया है। कल बाबा के पास कोई मिलने लिए आये थे परन्तु वह कुछ समझते थोड़ेही थे। बाबा ने समझाया यह सब ब्रह्माकुमार हैं। तुम भी ब्रह्मा के वा शिव के बच्चे हो ना। कहा हैं तो जरूर। यह सिर्फ सुनकर कहा, परन्तु दिल में लगा नहीं। तीर लगा नहीं कि सचमुच हम उनके बच्चे हैं। यह भी उनके बच्चे हैं, वर्सा ले रहे हैं। वैसे ही हमारे पास भी कई बच्चे हैं जिनको बहुत थोड़ा बुद्धि में बैठता है। वह खुशी, वह रूहाब नहीं दिखाई पड़ता है। अन्दर बड़ा खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। वह सारा चेहरे पर भी आता है। अभी तुम सजनियों का ज्ञान श्रृंगार हो रहा है। तुम जानते हो, हम साजन की सजनियां हैं। एक खेरूत (खेती का काम करने वाले) की लड़की की कहानी है ना। एक राजा खेरूत की लड़की को ले आया परन्तु फिर भी उसे राजाई में मज़ा नहीं आया तो लड़की को वापिस गांवड़े में

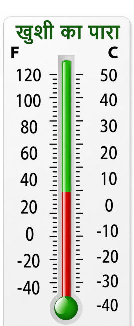

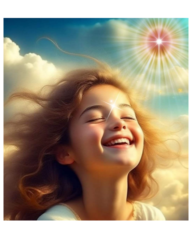

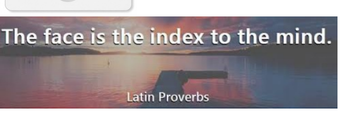

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

छोड़ आया। बोला तुम राजाई के लायक नहीं हो। यहाँ भी बाप श्रृंगार करते हैं। तुम भविष्य में महारानी बनो। श्रीकृष्ण के लिए भी कहते हैं भगाया, पटरानी बनाने के लिए परन्तु कुछ समझते नहीं हैं। सब हैं इरिलीजेस माइन्डेड।

Total Ignorance

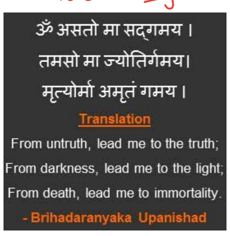
ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।
Translation
From untruth, lead me to the truth;
From darkness, lead me to the light;
From death, lead me to immortality.
- Brihadaranyaka Upanishad

समझते हैं, ऐसे ही दुनिया चलती रहती है। कुदरत है। बहुत हैं जो मन्दिर-टिकाणे में भी नहीं जाते। (Atheist) न शास्त्रों आदि को मानते हैं। गवर्मेन्ट भी धर्म को (Secular) मानने वाली नहीं है। भारत किस धर्म का था, अब किस धर्म का है, बिल्कुल नहीं जानते। अभी तुम बच्चे हो दैवीकुल के। जैसे वह क्रिश्चियन कुल के हैं वैसे तुम ब्राह्मण कुल के हो। बाप कहते हैं पहले-पहले तुम बच्चों को पतित शूद्र से ब्राह्मण बनाता हूँ। पावन बनते-बनते फिर 21 जन्मों के लिए तुम दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे। दैवी गोद में जायेंगे। आगे थे आसुरी गोद में। आसुरी गोद से फिर तुम ईश्वरीय गोद में आये हो। एक बाप के बच्चे भाई-बहिन हैं। यह एक वन्डर है। सब कहेंगे हम ब्राह्मण कुल के हैं। हमको तो श्रीमत पर चलना है, सबको सुख देना है, रास्ता बताना है। दुनिया में कोई नहीं

परमधाम जाना है क्योंकि ड्रामा का चक्र अब पूरा होता है। यह भी तुम जानते हो कि यह बहुत गन्दी दुनिया है। परमात्मा को तो कोई भी नहीं जानते, न जानेंगे इसलिए कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। उन्हों के लिए तो यह नर्क ही स्वर्ग के समान है। उन्हों की बुद्धि में यह बातें बैठ न

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

19-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सकें। तुम बच्चों को यह सब विचार सागर मंथन करने के लिए बहुत एकान्त चाहिए। यहाँ तो

They will never know about God & his creation Drama

They will play in this drama, just like Infinite loop ∞

चढ़ाओ नशा...

जो मुख से कहे - बेहद के बाप से बेहद का वर्सा कैसे लिया जाता है। तुमको बेहद का बाप मिला है। तुम ही उनके बच्चे बने हो। बुद्धि से जानते हो कल्प पहले जिन्होंने बाप से वर्सा लिया होगा, वही आकर लेंगे। थोड़ा भी बुद्धि में होगा तो कभी न कभी आकर पहुँचेंगे। आयेंगे तो कुछ न कुछ लेने लिए।

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay (7)

Most imp

तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। आज पावन बनने लिए आये हैं, कल फिर पतित बन पड़ते हैं। किसका खराब संग लगने से भूल जाते हैं कि बाप का बनकर फिर बाप को छोड़ा तो बहुत पाप आत्मा हो जाते हैं। जैसे कोई किसका खून करते हैं तो पाप लगता है। वह पाप भी थोड़ा है। यहाँ जो बाप का बनकर फारकती दे देते हैं, प्रतिज्ञा कर फिर विकारी बन पड़ते हैं तो बहुत पाप लगता है। अज्ञान काल में इतना नहीं लगता जितना ज्ञान में लगता है। अज्ञानकाल में तो मनुष्यों में क्रोध कॉमन होता है। यहाँ तुमने किस पर क्रोध किया

Why...? Subtle Point to understand

Shiv भगवान उवाच:

Note it down

कर्मों की गुह्य गति

v/s

May I have your Attention Please..!

इसको साधारण बात नही समझो

03-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

1 x 100

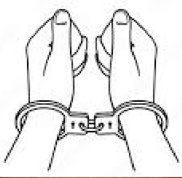

Refer last three pages for Example

तो सौगुणा दण्ड हो जाता है। अवस्था बिल्कुल गिर जाती है क्योंकि ईश्वर का फरमान नहीं मानते हैं। धर्मराज का फरमान मिलता है - पवित्र बनना है। तुम ईश्वर का बन जरा भी उनके फरमान की अवज्ञा की तो सौगुणा दण्ड चढ़ जाता है। क्रियेटर तो वह एक है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी उनकी रचना हैं। धर्मराज भी क्रियेशन है। धर्मराज का रूप भी बाबा साक्षात्कार कराते हैं। फिर उस समय सिद्ध कर बतलाते हैं - देखो तुमने प्रतिज्ञा की थी, हम क्रोध नहीं करेंगे, किसको दु:ख नहीं देंगे फिर भी तुमने इनको दु:ख दिया, तंग किया। अब खाओ सजा। बिगर साक्षात्कार सज़ा नहीं देते हैं। प्रुफ तो चाहिए ना। वह भी समझते हैं - बरोबर, मैंने बाप को छोड़कर यह कुकर्म किया। बदनामी कराने से फिर बहुतों पर आफत आ जाती है। कितनी अबलायें बन्धन में आ जाती हैं। सारा दण्ड बदनामी कराने वालों पर पड़ जाता है इसलिए बाप कहते हैं - बड़े ते बड़ा पाप आत्मा देखना हो तो यहाँ देखो, धोबी के पास बहुत मैले सड़े हुए कपड़े जब होते हैं तो सटका लगाने से फट पड़ते

Point to be Noted

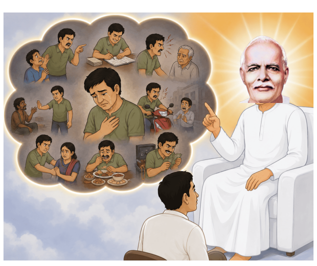

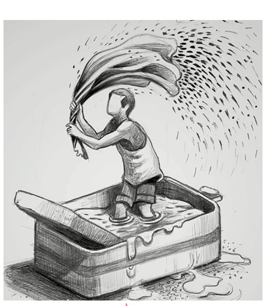

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Attention Please..!

इसको साधारण बात नही समझो

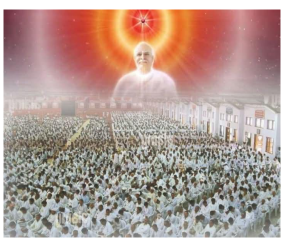

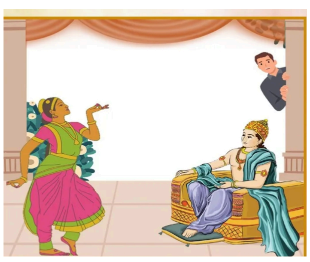

इन्द्रप्रस्थ की कहानी

इंद्र स्वर्ग और देवताओं के राजा हैं। इंद्र के दरबार (इंदर सभा) में परियां होती हैं जो अपनी इच्छानुसार हवा में उड़ सकती हैं। कहा जाता है कि एक बार इन्द्र ने परियों का नृत्य देखने की इच्छा व्यक्त की। पुखराज परी (पीली परी), नीलम परी (नीली परी) और लाल परी प्रवेश करती है और नृत्य करने के बाद इंद्र के पास बैठ जाती है। राजा इंद्र तब सबज़ परी (हरी परी) के प्रदर्शन की मांग करते हैं और वह सो जाता है। हरी परी (सब्ज़ परी), राजा इंद्र के दरबार जाते जाते रास्ते में संचार करने बाहर निकलती है। उड़ते समय वह अपने नीचे चांदनी रात की उद्यान की सुंदरता से आकर्षित हुई, उसे धरती पर उतरने का मोह हो जाता था। यह परिस्तान के कानूनों के खिलाफ था। खूबसूरत बगीचे में घूमते हुए, उसने फूलों से सजे बिस्तर पर सो रहे किसी व्यक्ति को देखती है। वह प्रिंस गुलफाम (फ्लावर प्रिंस) थे, जो गुलजार शाह (फ्लावर गार्डन किंग) के पुत्र थे। सब्ज़ परी को उससे प्यार हो जाता है। जैसे ही इन्द्र दरबार में उनकी उपस्थिति का समय निकट आ रहा था, हरी परी वापस इंद्र सभा के लिए उड़ान भरी। हरी परी वापस अपने महल में चली गई, लेकिन वह अपने मन को गुलफाम से दूर नहीं रख सकी। उसने अपने दास, अच्छे स्वभाव वाले काला देव को बुलाया, और अपने रहस्य को उजागर किया और राजकुमार को परिस्तान लाने के लिए कालादेव को मनाया। काला देव ने अपनी जादुई शक्तियों से, सोते हुए राजकुमार को, अपने फूलों के बिस्तर सहित, परिस्तान में सबज़ परी के महल में पहुँचाया। जब राजकुमार गुलफाम को पता चलता है कि सब्ज़ परी इंद्र के दरबार की परियों में से एक है, तो वह सब्ज़ परी से कहता है कि उसने कभी इंद्र का दरबार नहीं देखा है और वह दरबार का शान और वैभव देखना चाहता है। काला देव को बुलाते हुए, हरी परी ने उन्हें व्यवस्था के बारे में बताया। पहली बार एक नश्वर इंसान इन्द्र दरबार में गीत और नृत्य की रस्म को देखने में कामयाब रहा। पूर्णिमा की रात थी। राजा इंद्र एक दिव्य उद्यान में सभा कर रहे थे। गुलफाम एक विशाल शमशाद के पेड़ में छिपे बैठे थे। राजा ने सब्ज़ परी को पेश होने का आदेश दिया, जो दरबार में मुख्य नर्तक थी। उसने गीत और नृत्य दोनों में अन्य सभी परियों को पीछे छोड़ दिया। जब वह नृत्य कर रही थी तब लाल देव स्वर्ग के उद्यान के हर नुक्कड़ और कोने को देख रहा था। जब नृत्य अपने चरम पर था तो लाल दानव दौड़ते हुए दरबार में आया। "आदम बू! आदम बू!" वह चिल्लाया, "मुझे एक इंसान की गंध आती है!" नृत्य अचानक बंद हो गया। लुका-छिपी के लंबे खेल के बाद गुलफाम को आखिरकार खोजा गया और क्रोधित राजा इंद्र के सामने पेश किया गया। हंगामा अवर्णनीय था। परिस्तान में पहले कभी नश्वर इन्सान ने पैर नहीं रखा। "सबज़ परी को दंडित किया जाना चाहिए ताकि दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित हो", इंद्र ने गरजते हुए कहा। उन्होंने हरी परी के सुंदर पंखों को वहीं नष्ट करने का आदेश दिया। जब ऐसा किया गया तो उसने न केवल सभा से, बल्कि परियों के देश से उसे निर्वासित करने का आदेश दिया। उसे नश्वर पृथ्वी पर फेंक दिया जाना था। उसके लिए परिस्तान को अब से मना किया गया था। तब राजा इंद्र राजकुमार की ओर मुड़े। "तुम्हारे लिए, मनहूस", वह गरज गया, "मैं लाल दानव को आदेश देता हूं कि वह तुम्हें अनन्त आग के कुएं में फेंक दे। आप न तो मरेंगे और न ही जीवित रहेंगे, बल्कि अनंत काल तक आग में भूनेंगे।" इस प्रकार दोनों श्रापित हो गये।

Example

Take it Seriously..

हैं। तो यहाँ भी सटका सहन न कर चले जाते हैं। ईश्वर की गोद में आकर डायरेक्ट उनकी अवज्ञा की तो सजा खानी पड़ेगी। जो हेड ब्राह्मणी पार्टी ले आती है, उन पर बहुत बड़ी रेसपान्सिबिलिटी है। एक ने भी अगर हाथ छोड़ दिया, विकारी बना तो उनका पाप ले आने वाले पर आ जायेगा। ऐसे कोई को भी इन्द्रसभा में नहीं लाना चाहिए। नीलम परी, पुखराज परी की कहानी भी तो है ना। इन्द्र सभा में कोई छिपाकर ले आई तो इन्द्रसभा में बांस आने लगी। तो ले आने वाली पर दण्ड पड़ गया। ऐसे कुछ कहानी है। वह पत्थर बन गई। बाबा पारसनाथ बनाते हैं फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थर बन जाते हैं। राजाई पाने का सौभाग्य गँवा देते हैं। समझो कोई गरीब राजा की गोद लेते हैं। अगर नालायक बन पड़ा और राजा निकाल देवे तो क्या होगा। फिर कंगाल के कंगाल बन पड़ेंगे। यहाँ भी ऐसे है। फिर बहुत दु:ख महसूस होगा इसलिए बाप कह देते हैं - कभी भी कोई अवज्ञा नहीं करना। बाप है साधारण इसलिए शिवबाबा को भूल साकार में बुद्धि आ जाती है। अब तुम बच्चों

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

समझा?

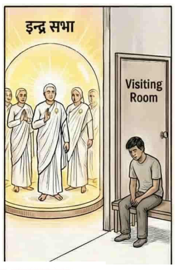

को श्रीमत मिलती है। जो गन्दे बन पड़ते हैं, ऐसे फिर इन्द्रसभा में बैठ न सकें। हर एक सेन्टर इन्द्रप्रस्थ है, जहाँ ज्ञान की वर्षा हो रही है।

नीलमपरी, पुखराज परी नाम तो है ना। नीलम, रतन को कहते हैं। यह बच्चों पर नाम रखे जाते हैं। कोई तो बहुत अच्छा जैसे रत्न है, कोई फ्लो नहीं है। जवाहरात में कोई-कोई बहुत दाग़ी होते हैं।

कोई एकदम प्योर होते हैं। यहाँ भी नम्बरवार रत्न हैं। कोई-कोई रत्न बहुत वैल्युबुल हैं। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। कोई तो सर्विस के बदले डिससर्विस करते हैं।

V/S

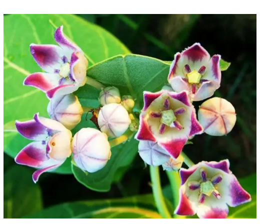

गुलाब के फूल और अक के फूल में भी कितना फर्क है। शिव पर दोनों चढ़ाते हैं। अब तुम जान गये हो, हमारे में फूल कौन-कौन हैं। उनकी ही सब मांगनी करते हैं कि बाबा हमको अच्छे-अच्छे फूल दो। अब अच्छे-अच्छे फूल कहाँ से लायें। रत्न ज्योत फूल तो कॉमन होते हैं। यह बगीचा है ना। तुम ज्ञान गंगायें भी हो। बाबा तो सागर ठहरा ना। यह (ब्रह्मा) है ब्रह्मपुत्रा बड़े ते बड़ी नदी। कलकत्ते में ब्रह्मपुत्रा नदी बहुत बड़ी है। जहाँ सागर और नदी का बड़ा भारी मेला लगता

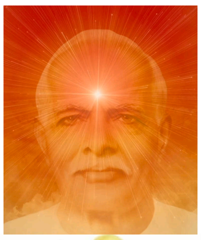

है। बरोबर ज्ञान सागर बाबा है। यह चैतन्य ज्ञान सागर है। तुम भी चैतन्य ज्ञान नदियाँ हो। वह तो हैं पानी की गंगायें। वास्तव में नदियों पर नाम पड़ा है परन्तु आसुरी सम्प्रदाय यह भी भूल गये हैं। हरिद्वार में गंगा के किनारे पर चतुर्भुज का चित्र दिखाते हैं। उनको भी गंगा कहते हैं परन्तु मनुष्य समझते नहीं कि यह चतुर्भुज कौन है। बरोबर इस समय तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। तुम हो सच्ची ज्ञान नदिया। वह हैं पानी की। वहाँ जाकर स्नान करते हैं। समझते कुछ भी नहीं। बस देवी है। मनुष्य को तो कभी 4-8 भुजा होती नहीं हैं। कुछ भी अर्थ नहीं समझते। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको क्या बनाते हैं। हम तो 100 प्रतिशत बेसमझ थे। बाबा की गोद लेने से हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। भल यहाँ कोई राजा हो परन्तु स्वर्ग के सुख और अभी के सुख में रात-दिन का फ़र्क है। तुम्हारे में कोई ऐसे भी हैं जो बाप को नहीं समझते हैं तो अपने को भी नहीं समझते हैं। देखना चाहिए कि मैं कितनी खुशबू देता हूँ? उल्टा-सुल्टा तो नहीं बोलता हूँ? क्रोध तो नहीं करता हूँ?

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

समझा?

03-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जरा सोचो तो सही...
भगवान जिसे प्यार करे और सम्मान करे
इससे ज्यादा क्या कुछ चाहिए?

बाप झट चलन से समझ लेते हैं कि यह बच्चा कैसे होगा। सर्विसएबुल बच्चे बाप को बहुत प्यारे लगते हैं। सब तो एक जैसे प्यारे नहीं लग सकते हैं। ऐसे बच्चों के लिए अन्दर से आटोमेटिकली आशीर्वाद निकलती है। बाप का नाफरमानबरदार बच्चा होगा तो बाप कहेंगे ऐसा बच्चा मुआ भला। कितना नाम बदनाम करते हैं, इसको कहा जाता है तकदीर। किसकी तकदीर में क्या है, झट पता लग जाता है।

May I have your Attention Please..!

Don't Take it easy

बाबा समझाते हैं - यह सपूत बच्चा है, वह कपूत है। बापदादा को नहीं पहचाना, तकदीर में वर्सा लेना नहीं है तो क्या करेंगे। इस ज्ञान मार्ग में कायदे बड़े कड़े हैं। बाप पवित्र बने और बच्चे न बनें तो वह बच्चा हकदार नहीं हो सकता है। उसको बच्चा नहीं समझेंगे। फिर कहेंगे हम तो शिवबाबा को वारिस बनायेंगे, तो बाबा 21 जन्म के लिए हमको रिटर्न में देंगे। इसका मतलब यह नहीं कि बाबा के पास आकर बैठ जाना है। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

रहते सबको सम्भालना भी है, परन्तु ट्रस्टी होकर रहना है। ऐसे नहीं कि तुम्हारे बच्चों आदि को बाप बैठ सम्भालेंगे। नहीं, ऐसे ख्यालात वाले भटक पड़ते हैं। यहाँ बाबा के पास तो बिल्कुल पवित्र चाहिए। अपवित्र कोई बैठ न सके। नहीं तो पत्थरबुद्धि बन जायेंगे। बाबा कोई श्राप नहीं देते हैं। यह तो एक लॉ है। बाप कहते हैं - फिर खबरदार रहना। कर्मेन्द्रियों से कोई पाप किया तो यह मरा। बड़ी भारी मंजिल है। बाबा का बच्चा बना तो फिर बीमारी सारी उथल खायेगी। डरना नहीं है। वैद्य लोग भी कहते हैं - फलानी दवाई से तुम्हारी बीमारी बाहर निकलेगी। तुम डरना नहीं। बाप भी खुद कहते हैं - तुम बाप के बनेंगे तो माया रावण तुमको बहुत हैरान करेगा। खूब तूफान में ले आयेगा। अभी तुमको रांग और राइट की बुद्धि मिली है। और कोई को रांग-राइट की बुद्धि नहीं है, सबकी है विनाश काले विपरीत बुद्धि। प्रीत बुद्धि तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। प्रीत बुद्धि वाले बाप की सर्विस बहुत अच्छी करेंगे। अच्छा!

समझा?

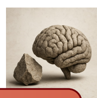

m.m.m....imp.

Subtle Point to understand

समझा?

So, Be Prepared

चढ़ाओ नशा...

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

Mind very well...
Not Even a slight

1) ईश्वर का बच्चा बनकर जरा भी उनके फरमान की अवज्ञा नहीं करनी है। इन कर्मेन्द्रियों से कोई भी कुकर्म नहीं करना है। उल्टे-सुल्टे बोल नहीं बोलने हैं। सपूत बन बाप की आशीर्वाद लेनी है।

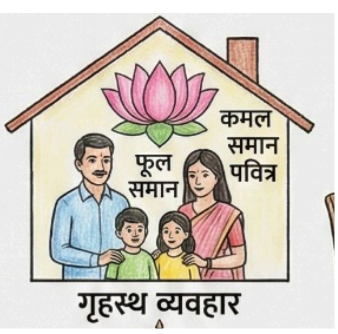

2) ट्रस्टी बनकर अपने गृहस्थ व्यवहार को सम्भालना है। ज्ञान मार्ग के जो कायदे हैं उन पर पूरा-पूरा चलना है। राइट और रांग को समझकर माया से खबरदार रहना है।

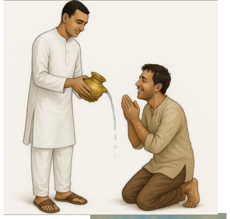

03-06-2026 ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: तड़फती हुई भिखारी, प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने वाले सर्व खजाने से सम्पन्न भव

जैसे लहरों में लहराती व डूबती हुई आत्मा एक तिनके का सहारा ढूंढती है।

ऐसे दु:ख की एक लहर आने दो फिर देखना अनेक सुख-शान्ति की भिखारी आत्मायें तड़फते हुए आपके सामने आयेंगी।

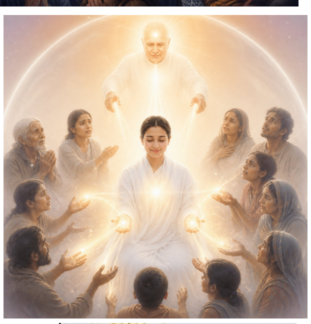

ऐसी प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से, सर्व खजानों से भरपूर करो।

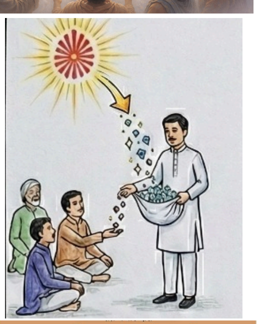

साईं इतना दीजिये,
जा मे कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ,
साधु ना भूखा जाय ॥

Result

सर्व खजाने इतने जमा हो जो (1) अपनी स्थिति भी कायम रहे और (2) अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको।

Action

Step:1 Step:2

स्लोगन:- कल्याण की भावना रख शिक्षा दो तो शिक्षायें दिल से लगेंगी।

Reaction/Result

Points: ज्ञान योग ध

ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

सदा हर्षित रहना यह ज्ञान का गुण है, इसमें सिर्फ रूहानियत एड करना है।

हर्षितपन का संस्कार भी एक वरदान है जो समय पर बहुत सहयोग देता है।

Action Reaction/Result

जो स्वयं सदा हर्षित रहते हैं वह कैसे भी मन वाले को भी हर्षित कर देते हैं,

इज़ी नेचर वाले अपने खुशनुमा हर्षित चेहरे से भारी वायुमण्डल को भी हल्का बना देते हैं।

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → Click

All अव्यक्त इशारे May 26 → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली एक नई पहल शुरू कर रही है Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।
जो कि मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

Click

इस mind map में,
मुरली की Main बॉडी को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

- ज्ञान
  - आत्मा
    - तुमको पारलौकिक बाप की प्रॉपर्टी मिलती है।
    - हम बेहद के बाप द्वारा बड़े ते बड़ी प्रापर्टी स्वर्ग की बादशाही ले रहे हैं।
    - तुम सजनियों का ज्ञान श्रृंगार हो रहा है
      - हम साजन की सजनियां हैं
      - बाप श्रृंगार करते हैं।
        - तुम भविष्य में महारानी बनो
    - तुम बच्चे
      - तुम बच्चों को पतित शूद्र से ब्राह्मण बनाता हूँ।
      - तुम बच्चे हो दैवीकुल के।
      - जैसे वह क्रिश्चियन कुल के हैं वैसे तुम ब्राह्मण कुल के हो।
        - यह एक वन्डर है।
      - तुम दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे। दैवी गोद में जायेंगे।
      - ईश्वरीय गोद में आये हो।
      - सर्विसएबुल बच्चे बाप को बहुत प्यारे लगते हैं।
      - बाप पवित्र बने और बच्चे न बनें तो वह बच्चा हकदार नहीं हो सकता है।
      - बाबा का बच्चा बना तो फिर बीमारी सारी उथल खायेगी।
        - डरना नहीं है।
    - तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं।
      - आज पावन बनने लिए आये हैं, कल फिर पतित बन पड़ते हैं।
    - तुम ज्ञान गंगायें भी हो।
      - तुम भी चैतन्य ज्ञान नदियाँ हो।
      - तुम हो सच्ची ज्ञान नदिया।
    - तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो।
  - परमात्मा
    - हमारा पारलौकिक बाप है-परमपिता परमात्मा शिव
    - बेहद का बाप बहुत मीठा है,
      - जो हमको राजाई के लायक बनाते हैं।
    - क्रियेटर तो वह एक है।
      - ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी उनकी रचना हैं।
      - धर्मराज भी क्रियेशन है।
    - धर्मराज का रूप भी बाबा साक्षात्कार कराते हैं।
      - देखो तुमने प्रतिज्ञा की थी, हम क्रोध नहीं करेंगे, किसको दु:ख नहीं देंगे फिर भी तुमने इनको दु:ख दिया, तंग किया। अब खाओ सजा।
      - बाप को छोड़कर यह कुकर्म किया।
    - बाबा पारसनाथ बनाते हैं
      - फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थर बन जाते हैं।
      - राजाई पाने का सौभाग्य गँवा देते हैं।
    - चैतन्य ज्ञान सागर है।
  - ब्रह्मा
    - सब बच्चों का अलौकिक बाप है,
      - इनको ही प्रजापिता ब्रह्मा कहेंगे।
      - इतने बच्चे और किसको होते हैं क्या, सिवाए प्रजापिता ब्रह्मा के।
      - जबकि बेहद के बाप ने इसमें प्रवेश किया है तो यह हो गया दादा।
    - यह (ब्रह्मा) है ब्रह्मपुत्रा बड़े ते बड़ी नदी।
  - माया
    - बिल्कुल ही नालायक बना दिया है।
    - तुम बाप के बनेंगे तो माया रावण तुमको बहुत हैरान करेगा।
      - खूब तूफान में ले आयेगा।

ज्ञान

कहानी / उदाहरण

- श्रीकृष्ण के लिए भी कहते हैं
  - भगाया, पटरानी बनाने के लिए परन्तु कुछ समझते नहीं हैं
- बाबा के पास कोई मिलने लिए आये
  - तुम भी ब्रह्मा के वा शिव के बच्चे हो ना। कहा हैं तो जरूर। यह सिर्फ सुनकर कहा, परन्तु दिल में लगा नहीं।
  - तीर लगा नहीं कि सचमुच हम उनके बच्चे हैं।
  - यह सब ब्रह्माकुमार हैं। यह भी उनके बच्चे हैं, वर्सा ले रहे हैं।
- नीलम परी, पुखराज परी की कहानी
  - इन्द्र सभा में कोई छिपाकर ले आई तो इन्द्रसभा में बांस आने लगी। तो ले आने वाली पर दण्ड पड़ गया।
    - वह पत्थर बन गई।
- धोबी के पास बहुत मैले सड़े हुए कपड़े जब होते हैं
  - तो सटका लगाने से फट पड़ते हैं।
    - तो यहाँ भी सटका सहन न कर चले जाते हैं।
- गरीब राजा की गोद लेते हैं।
  - अगर नालायक बन पड़ा और राजा निकाल देवे तो क्या होगा।
    - फिर कंगाल के कंगाल बन पड़ेंगे।
- जवाहरात
  - कोई-कोई बहुत दागी होते हैं।
    - कोई तो सर्विस के बदले डिससर्विस करते हैं।
  - कोई एकदम प्योर होते हैं।
    - कोई-कोई रत्न बहुत वैल्युबुल हैं। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं।
- रत्न ज्योत फूल तो कॉमन होते हैं।
- हरिद्वार में गंगा के किनारे पर चतुर्भुज का चित्र दिखाते हैं।

इंग्लिश शब्द

- इरिलीजेस माइन्डेड।
  - समझते हैं, ऐसे ही दुनिया चलती रहती है।
  - कुदरत है। बहुत हैं जो मन्दिर - टिकाणे में भी नहीं जाते।
  - न शास्त्रों आदि को मानते हैं।
- सर्विसएबुल
- आटोमेटिकली

Other points

- गवर्मेन्ट भी धर्म को मानने वाली नहीं है।
- हर एक सेन्टर इन्द्रप्रस्थ है, जहाँ ज्ञान की वर्षा हो रही है।

Comparison

- गुलाब के फूल और अक के फूल में भी कितना फर्क है।
- स्वर्ग के सुख और अभी के सुख में रात- दिन का फ़र्क है।
- बुद्धि
  - तुमको रांग और राइट की बुद्धि मिली है।
  - सबकी है विनाश काले विपरीत बुद्धि।
  - प्रीत बुद्धि तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं।
    - प्रीत बुद्धि वाले बाप की सर्विस बहुत अच्छी करेंगे।

ज्ञान

- **Special points**
  - दुनिया में कोई नहीं जो मुख से कहे बेहद के बाप से बेहद का वर्सा कैसे लिया जाता है।
  - बाबा की गोद लेने से हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं।
  - बाप का नाफरमानबरदार बच्चा होगा तो बाप कहेंगे ऐसा बच्चा मुआ भला।
- **पाप**
  - बाप का बनकर फिर बाप को छोड़ा तो बहुत पाप आत्मा हो जाते हैं।
  - प्रतिज्ञा कर फिर विकारी बन पड़ते हैं। तो बहुत पाप लगता है।
    - अज्ञान काल में इतना नहीं लगता जितना ज्ञान में लगता है।
  - एक ने भी अगर हाथ छोड़ दिया, विकारी बना तो उनका पाप ले आने वाले पर आ जायेगा।
- **फरमान**
  - ईश्वर की गोद में आकर डायरेक्ट उनकी अवज्ञा की तो सजा खानी पड़ेगी।
  - ईश्वर का बन जरा भी उनके फरमान की अवज्ञा की तो सौगुणा दण्ड चढ़ जाता है।
  - जो गन्दे बन पड़ते हैं, ऐसे फिर इन्द्रसभा में बैठ न सकें।
  - यहाँ बाबा के पास तो बिल्कुल पवित्र चाहिए। अपवित्र कोई बैठ न सके।
  - खबरदार रहना। कर्मेन्द्रियों से कोई पाप किया तो यह मरा।
- **Checking points**
  - कितनी खुशबू देता हूँ?
  - उल्टा-सुल्टा तो नहीं बोलता हूँ?
  - क्रोध तो नहीं करता हूँ?

धारणा

- सर्विसएबुल सपूत बच्चे बन सबको सुख दो, किसी को भी दु:ख न दो
- कभी भी ईश्वर के सामने प्रतिज्ञा कर उसकी अवज्ञा नहीं करना है।
- अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।
- ईश्वर का बच्चा बनकर जरा भी उनके फरमान की अवज्ञा नहीं करनी है।
- इन कर्मेन्द्रियों से कोई भी कुकर्म नहीं करना है।
- उल्टे- सुल्टे बोल नहीं बोलने हैं।
- सपूत बन बाप की आशीर्वाद लेनी है।
- ज्ञान मार्ग के जो कायदे हैं उन पर पूरा-पूरा चलना है।
- राइट और रांग को समझकर माया से खबरदार रहना है।
- गृहस्थ व्यवहार में रहते सबको सम्भालना भी है, परन्तु ट्रस्टी होकर रहना है।

सेवा

हमको तो श्रीमत पर चलना है, सबको सुख देना है, रास्ता बताना है।

This is Just churning (विचार सागर मंथन)....
Kindly grab it as per your divine Intellect

मीठे बाबा की श्रीमत है की "बच्चे विचार सागर मंथन करो"

Click

प्रश्नः- ज्ञान सुनते हुए भी बच्चों में उसकी धारणा क्यों नहीं होती है?

उत्तरः- क्योंकि विचार सागर मंथन करना नहीं आता है। बुद्धियोग देह और देह के सम्बंधों में लटका हुआ है। पहले जब बुद्धि से मोह निकले, तब कुछ धारणा भी हो। मोह ऐसी चीज़ है, जो एकदम बन्दर बना देता है इसलिए बाप बच्चों को पहला-पहला वायदा याद दिलाते हैं - देह सहित, देह के सब सम्बन्धों को भूलो और मुझे याद करो।

कालों का काल है बाप। उनकी आज्ञा नहीं मानेंगे तो धर्मराज से डन्डा खायेंगे।
---- साकार मुरली:- 30/1/25

हनुमान का छोटा सा भी मंदिर होगा तो उनके पास लाल डंडा या गदा *जरूर होगी।*
यह यादगार है बापदादा के right hand *धर्मराज* का..

इसीलिए हनुमान चालीसा में कहा है कि
राम दुआरे तुम रखवारे(राम द्वार = सूक्ष्म वतन धर्मराजपुरी बन जाएगी)
होत न आज्ञा बिनु पैसारे... (हनुमान/ धर्मराज के द्वारा सजाओ के बल से जब तक आत्मा पावन नही बनती तब तक उनको परमधाम में प्रवेश होने की permission नहीं है except अष्ट रत्न)

(उसका यादगार: majority गांव में आज भी हनुमान मंदिर देखेंगे तो वो गांव के बाहर/गांव के दरवाजे पर/entrance के आसपास होगा... इसका मतलब है कि हनुमान/धर्मराज परमधाम के बाहर यानी सूक्ष्मवतन पे खड़ा है।)

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"

AV: 25/11/95

Attention Please...!

जो बाबा, साकार मुरली में कहते है की पिछाड़ी में कायदे बहुत कड़े हो जाएंगे। वो इसी संदर्भ में बाबा कहते होंगे।

Example :→ दिन-प्रतिदिन बहुत कड़े कायदे होते जायेंगे।
SM: 31/12/2025

Sakar Murli date :- 8/6/2023

से पूछो कि क्राइस्ट याद आता है या गॉड फादर? जानते हो कि पाप करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा। परन्तु बाप दण्ड कभी नहीं देता। (Note down!) वह करनकरावनहार है। धर्मराज द्वारा सजा दिलाते हैं। गॉड तो मोस्ट बील्वेड बाप है। वह झूठे कलंक लगाते हैं कि बाप ही सुख-दु:ख देते हैं। तो क्या बेरहम हैं? गाते भी हैं मर्सीफुल। बाप कहते हैं मैं कैसे बेरहमी करुँगा। माया ने तुम्हारे पर बेरहमी की है। मैं तो उनसे छुड़ाता हूँ। माया

Avyakt Murli : 15/11/2003

ब्रह्मा बाप को फॉलो करो। अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, न अधर कुमार कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो.. गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

Dadi Jankiji says : → **Click**

शिवबाबा

हनुमान = **धर्मराज** = शंकर

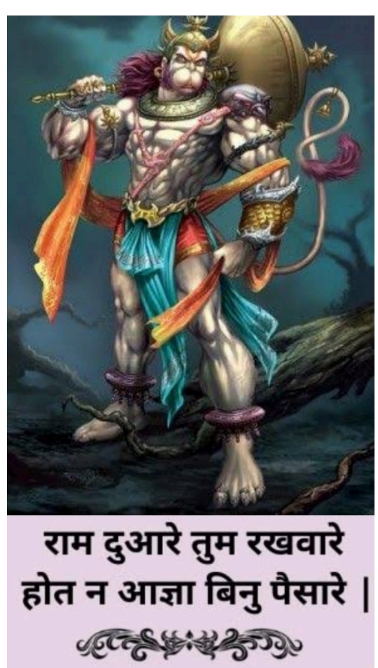

ब्रह्माबाबा

It is not from Authentic source But placed here for Building connection.

- शंकर क्या करते हैं? उनका (विषपायी) पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। ★★★
(मु.14.5.70 पृ.2 आदि)

बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

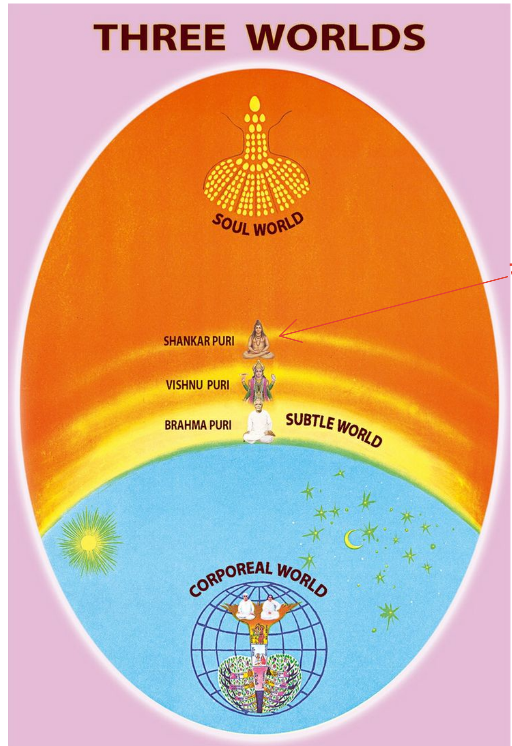

राम दुआरे तुम रखवारे

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी।
AV: 2/11/87

महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया।
AV: 28/12/79

Mind very well... ★★★ शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। AV: 9/10/71

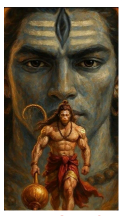

शंकर स्वयं केसरी नंदन

Reference → **Click**

Secret Revealed

m.Imp. ★★★★★

(36) बच्चों ने पूछा कि एक ही समय इकट्ठा मृत्यु कैसे और क्यों होता? इसका कारण है। यह तो जानते हो और अनुभव करते हो कि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। सभी आत्माओं का, द्वापरयुग वा कलियुग से किए हुए विकर्मों वा पापों का खाता जो भी रहा हुआ है वह अभी पूरा ही समाप्त होना है। क्योंकि सभी को अब वापस घर जाना है। द्वापर से किये हुए कर्म वा विकर्म दोनों का फल अगर एक जन्म में समाप्त नहीं होता तो दूसरे जन्मों में भी चूक्तू का वा प्राप्ति का हिसाब चलता आता है। लेकिन अभी लास्ट समय है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए अब जल्दी-जल्दी जन्म और मृत्यु - इस सजा द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। तो वर्तमान समय मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी मैजारिटी का बहुत दुःख से हो रहा है। न सहज मृत्यु, न सहज जन्म है। तो दर्दनाक मृत्यु और दुःखमय जन्म यह जल्दी हिसाब किताब चूक्तू करने का साधन है। जैसे इस पुरानी दुनिया में चीटियाँ, चीटें, मच्छर आदि को मारने के लिए साधन अपनाये हुए हैं। उन साधनों द्वारा एक ही साथ चीटियाँ वा मच्छर वा अनेक प्रकार के कीटाणु इकट्ठे ही विनाश हो जाते हैं ना। ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों, चीटियों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। मानव और चीटियों में अंतर ही नहीं रहा है। यह सब हिसाब-किताब और सदा के लिए समाप्त होने के कारण इकट्ठा अकाले मृत्यु का तूफान समय प्रति समय आ रहा है। वैसे धर्मराज पुरी में भी सजाओं का पार्ट अंत में नूँधा हुआ है। लेकिन वह सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती और हिसाब-किताब चूक्तू करती है। लेकिन कर्मों के हिसाब अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं। एक है आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे - बिमारियाँ । अपने आप ही आत्मा तन

Example

(1)

Point to be Noted

(3)

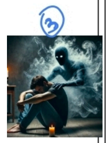

(2)

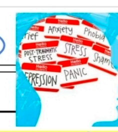

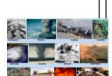

Point to be Noted

By hook or by crook
चाहे प्यार से..
चाहे मार से..

imp to understand

Most

के रोग द्वारा हिसाब चूक्तू करती है। ऐसे और भी दिमाग कमजोर होना वा किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता। ऐसे-ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं हिसाब-किताब भोगती है। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा दुःख की प्राप्ति। यह तो समझ सकते हो ना, कि कैसे है। और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू होना। तीनों प्रकार के आधार से हिसाब-किताब चूक्तू हो रहे हैं। तो धर्मराजपुरी में सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू नहीं होगा। वह यहीं साकार सृष्टि में होगा। सारे पुराने खाते सभी के खत्म होने ही हैं। इसलिए यह हिसाब-किताब चूक्तू की मशीनरी अब तीव्रगति से चलनी ही है। विश्व में यह सब होना ही है। समझा। यह है कर्मों की गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चूक्तू हुए है वा अभी भी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता भी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते है, जितना सोचते है उतना नहीं कर पाते है और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्यों हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत उल्लास होते भी परवश अनुभव करते है, कहते है ऐसा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव संस्कार के परवश। यह तीनों प्रकार के परवश स्थितियाँ होती है तो न चाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो - किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे तो नहीं ले आता। हिसाब चूक्तू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इसी विधि से अपने आपको चेक करो। दुःखमय दुनिया में तो दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने ही हैं। ऐसे समय पर

Attention..!

सेफ्टी का साधन है ही 'एक बाप की छत्रछाया'। छत्रछाया तो है ही ना!

(10.12.1984)